मिथिला की ब्राह्मणीक संस्कृतियाँ अतीत एवं वर्त्तमान

डॉ० सोनी कुमारी

बहादुरपुर लहेरियासराय, दरभंगा

मिथिला प्राचीन भारत का एक राज्य रहा है वर्त्तमान में यह उत्तरी बिहार और नेपाल की तराई का इलाका है जिसे मिथिला के नाम से जाना जाता है। यह अपनी बौद्धिक परंपरा के लिए भारत और भारत के बाहर जानी जाती रही है हिन्दु, धार्मिक ग्रंथों में सबसे पहले इसका उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में तथा स्पष्ट विवरण बाल्मीकीय रामायण में मिलता है। इसका उल्लेख रामायण के अलावे महाभारत पुराण, बौद्धग्रंथ एवं जैन ग्रंथों में भी मिलता है।

मिथिला में मैथिल ब्राह्मण मूल निवासी माने जाते हैं। ये पंचगौड़ ब्राह्मण के अंतर्गत आते हैं। इनके उपनाम झा मिलते हैं जो संस्कृत शब्द उपाध्याय का अपभ्रंश है। मैथिल राज्य की स्थापना राजा मिलि ने की थी जो प्रथम जनक के विदेह पुत्र थे इसी कारण इन्हें विदेह कहा गया और इनके द्वारा बसी नगरी मिथिला कही गयी ये न्याय मीमांसा के रचयिता गौतम ऋषि के समकालीन थे।

यहाँ के हजारों ग्रंथों स्मृतियों में मिथिला राज्य में हमेशा से ज्ञानियों का भंडार रहा है शास्त्र चर्चा की सदेव यह दैवभूमि रही है। यहाँ के राजा–हमेशा ब्राह्मण रहे हैं, जो मैथिली थे। यह क्षेत्र हमेशा ज्ञान से, गुणों से और धार्मिकता से सम्पन्न रहा है।

मैथिली ब्राह्मणिक समाज ने एक नया रास्ता दिखाया ऐसे वर्गों में अपना स्थान सुनिश्चित रखा जो हमेशा ज्ञान का देवता कहा जाता है। मिथिला के तीन ब्राह्मण, पंडित रघुनंदन झा पंडित जीवननाथ झा, पंडित शिवराम झा जिन्हें अकबर द्वारा सम्मान प्राप्त हुए थे।

मैथिल ब्राह्मण याज्ञवल्क्य मुनि की उपासना करने वाले शुक्ल यजुर्वेदीय व वेद वेदांग में पारंगत होते हैं। समस्त भारतवर्ष में सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज के 24 ऋषि मूल गोत्र कर्त्ता है। 1. शाण्डिल्य, 2. वत्स, 3. काश्यप, 4. पारासर, 5. भारद्वाज, 6.कात्याययन, 7.गौतम, 8. कौशिक, 9. कृष्णात्रेय, 10 विष्णुवृद्धि, 11. सावर्ण्य, 12. वशिष्ठ, 13. कौण्डिल, 14. मोद्रल, 15. परासर।

मुस्लिम शासक फिरोजशाह घुलान ने मैथिली ब्राह्मण वंश के प्रकाण्ड पंडित कामेश्वर ठाकुर के पुत्र योगीश्वर ठाकुर को मिथिला का राज्य दानस्वरूप भेंट किया। इन्होंने मैथिली ब्राह्मणों के संगठन का कार्य भारी परिश्रम के साथ अन्य विद्वानों मैथिल ब्राह्मणों को साथ लेकर किया।

हमारे मिथिला ब्राह्मणिक संस्कृति के महान विभूति इस प्रकार रहे है– वाचस्पति मिश्र, दार्शनिक, मण्डन मिश्र, विद्यापति (मैथिली कवि), नरेन्द्र झा (अभिनेता), विनोदानन्द झा, जगन्नाथ मिश्र (मुख्यमंत्री), ललित नारायण मिश्र (मुख्यमंत्री), नागार्जुन (मैथिली कवि), प्रभात झा, सुभद्रा झा (भाषा वैज्ञानिक), गंगानाथ झा (मैथिल विद्वान), अमरनाथ झा (कुलपति), आदित्य नाथ झा (कुलपति), लक्ष्मीकांत झा (रिजर्व बैंक के गर्वनर अमेरिका में भारत के राजदूत मिथिला में मूलभूत ब्राह्मणों के चार क्षत्रिय, योग्य, पंजीबद्ध, जयवार क्षत्रिय वे थे जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक अपना समय पूजा पाठ अग्निहोत्र इत्यादि पवित्र काम में व्यतीत करते थे।

मिथिला के राजा हरिसिंह के समय से पंजीकारों की नियुक्ति हुई जिससे विवाह के समय रक्तवंश की सही जानकारी रखी जाती थी सात वंशजों के बारे में पंजी साक्ष्य के रूप में सामने रखी जाती थी इनकी वंशावलियों में आनेवाली संतानों के नाम तथा उनके संबंध को जाँच कर शास्त्रानुकूल घोषित करके उनके विषय में प्रमाण–पत्र देने का पूरा अधिकार दिया गया।

मिथिला क्षेत्र के कुछ राजवंश परिवार जैसे ओइनवार वंश, दरभंगा राज, मैथिल ब्राह्मण थे और मैथिल संस्कृति के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध थे 1960–1970 के दशक में मैथिल ब्राह्मण महत्त्वपूर्ण बन गए पंडित विनोदानंद झा, ललित नारायण मिश्र समुदाय के प्रमुख राजनेताओं के रूप में उभरे।

मिथिला विभूति विद्यापति के गीतिकाव्य की एक अनोखी परंपरा चल पड़ी जिसने तीन शताब्दियों तक पूर्वीय भारत में मैथिली का सिक्का जमा दिया। मैथिली के पदावलिया रची इनके गोसाउनिक गीत एवं नचारी मैथिली, नाटक मिथिला के सरकार में गीति नाट्य परंपरा बन रही थी जिसको कीर्त्तनियाँ नाटक कहते हैं। मैथिल नाटककारों में शंकरदेव प्रसिद्ध हुए।

आधुनिक काल 1860 ई० में पश्चिमी शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ। रेल तार के आरंभ होने से मुद्रणालयों की स्थापना से साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं में जागृति आई। कवीश्वर चंदा झा का नाम महत्त्वपूर्ण है। मैथिली लेखनशैली की वैज्ञानिक पद्धति का निर्माण डॉ० श्री उमेश मिश्र रमानाथ झा, दीनबंधु झा द्वारा किया गया।

भोलानाथ दास का योगदान काफी महत्त्वपूर्ण रहा है उन्होंने मैथिली को विश्वविद्यालय के अध्ययन क्षेत्र में प्रवेश दिलाकर मिथिला की गरिमा को काफी बढ़ाया।

मिथिला की ब्राह्मणिक संस्कृति इतनी विकसित रही की मिथिला की धरती अतीत एवं वर्त्तमान दोनों पक्षों में अपनी अलग पहचान बनाया है। जहाँ इसका अतीत इतना समृद्ध रहा कि ज्ञान और संस्कृति के सूत्रधार के रूप में हम इस क्षेत्र को जानते हैं, मिथिला नाम सुनते ही यहाँ की ब्राह्मणवादी परंपरा आज भी कायम नजर आती है हर गाँव, कस्बा सभी क्षेत्रों में ब्राह्मण स्थान के नाम से जगह स्थापित है जहाँ सभी जातियों के लोगों द्वारा उनको पूजा जाता है अपने किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत उनके स्थानों को पवित्र मानकर पूजते हैं ऐसा मानते हैं कि उनके कार्य उनके बिना आह्वान के सफलीभूत नहीं हो सकते।

इससे यह साबित होता है कि समाज में ब्राह्मण का स्थान कितना ऊँचा और सम्मानीय रहा है किन्तु कुछ गलत प्रथाओं के कारण उन्होंने अपने सम्मान में गिरावट आयी। जैसे छुआदूत की परंपरा का चलन उनके गलत अवधारणाओं को बताते हैं। जाति–व्यवस्था की मिथिला संस्कृति बहुत ही समृद्ध रही है यहाँ सभी–जातियाँ मिलती है जिन्होंने अपनी कर्मठता से अपनी अलग पहचान बनाई है इन सबमें एकता और ज्ञान की धारा का विकास जो देखने को मिलता है वह मिथिला की ब्राह्मणिक संस्कृति की ही देन है जिन्होंने उनके ज्ञान का अनुकरण कर विकास के पथ पर अग्रसर है आज यहाँ के लोग दुनिया के हर क्षेत्र में अपनी ज्ञान का लोहा मनवाने में लगे हैं जिसमें वे सफल भी हुए है।

संदर्भ–सूची :

1. सिविलाइजेशन विजन ऑफ मिथिला यंग महाकोशल, पृष्ठ–64

2. रविन्द्र कुमार वर्मा, कास्ट एण्ड विहार पॉलिटिक्स, मई 1991, इकोनॉमिक एण्ड पोलिटिकल विकली 28 मार्च 2013
3. माखन झा, एथ्रोपोलोजी ऑफ ऐनसिऐंट हिन्दु किंगडम, एम.डी. पब्लिकेशन, 1997
4. आसीन मैत्रेय, ब्राह्मणों की धार्मिक संस्कृति केस स्टडी ऑफ मैथिल ब्राह्मण, इंटर इंडिया पब्लिकेशन, पृष्ठ–54, 1986
5. हिस्ट्री ऑफ मिथिला लिटरेचर पृष्ठ–130 जे० के० मिश्र
6. मिथिला दर्पण, रासबिहार लाल दास, पृष्ठ –142–143
7. बिहार द हार्ट ऑफ इंडिया, पृष्ठ–104 जान हाउडन
8. जे० के० मिश्र, हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, पृष्ठ–78
9. जनरल ऑफ द बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसायटी, पृष्ठ–516
10. म० भ० परमेश्वर झा, मिथिला सत्य विमर्श, पृष्ठ–114
11. डॉ० राम प्रकाश शर्मा, मिथिला का इतिहास, पृष्ठ– 1550
12. महाकवि विद्यापति की रचनाओं का काव्य सौन्दर्य, हिन्दू अवस्था, अप्रैल, 2006
13. मैथिली भाषा का जोड़ नहीं, जागरण काल अप्रैल, 2014